क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति

संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद- 211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइलः 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या ....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

दिनाँक :

प्रकाशनार्थ

11 फरवरी 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

क्रियायोग vekoL;k ls if.kek dh rjQ ;k=k dk foKku

11 फरवरी 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने समस्त आध्यात्मिक साधनाओं, पूजा, जप, तप, व्रत, दान, यज्ञ आदि के वास्तविक स्वरूप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला । उन्होंने मौनी अमावस्या के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि मौनी अमावस्या में मौन का अभिप्राय मौन अवस्था से है तथा अमावस्या का अभिप्राय अँधकार से है । अँधकार अज्ञानमय अवस्था को व्यक्त करता है । प्राचीन काल में भारत आध्यात्म और विज्ञान के उच्चतम् शिखर आसीन था जिसमें लोग अज्ञानमय अवस्था में भी परम मौन रहते हुए सम्पूर्ण कर्मों को करने में समर्थ थे । मौनी अमावस्या का अभिप्राय है अमावस अर्थात् अज्ञानमय अवस्था में भी मौन रहते हुए सम्पूर्ण कर्मों को करने की अलौकिक शक्ति से विभूषित होने की अवस्था ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा साधक अमावस्या से पूर्णिमा की तरफ यात्रा करता है । उसके अंदर का अज्ञानमय अँधकार धीरे–धीरे लुप्त होने लगता है और परम ज्ञान की दिव्य आभा आलोकित होने लगती है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा साधक शरीर और मन के बीच दूरी घटाने का अभ्यास करता है । मन की बर्हिमुखी प्रवृत्ति को अन्तर्मुखी कर स्वरूप में केन्द्रित करने पर शरीर व मन के बीच दूरी घटने लगती है । शरीर व मन के बीच दूरी जैसे–जैसे घटती जाती

है वैसे–वैसे अँधकार अर्थात् अज्ञान का लोप होने लगता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा मन को शरीर पर केन्द्रित करने का अभ्यास ही अन्तरयात्रा है जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है । मोक्ष का अभिप्राय है अज्ञानता का पूर्ण समापन । स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि शरीर व मन के बीच दूरी घटाते जाने पर एक ऐसी अवस्था प्रकट होती है जब शरीर व मन के बीच दूरी पूर्णतया शून्य हो जाती है। ऐसी अवस्था में न तो शरीर की अनुभूति होती है और न मन की अनुभूति होती है । अन्तःकरण में तीसरी शक्ति का जागरण होता है जिसे विवेक, इन्ट्यूशन, अन्तर्ज्ञान, शिव नेत्र, कुण्डलिनी, सरस्वती आदि रूपों में वर्णित किया गया है । ऐसी अवस्था में स्पष्ट हो जाता है कि हमारे और परब्रह्म के बीच दूरी शून्य है । ईश्वरानुभूति की इसी अवस्था को आत्मसाक्षात्कारी ऋषियों ने अहंम्ब्रह्मास्मि, शिवोहम, एक ओमकार सतनाम, अद्वैत दर्शन आदि के रूप में व्यक्त किया है । आदिशंकराचार्य ने परब्रह्म से एकता की अनुभूति को अलौकिक रूप में इस प्रकार वर्णित किया है :

''मनोबुद्ध यहंकारचित्तानि नाहं, न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः, चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥
न मत्युर्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता न जन्मः ।
न बंधुर्न मित्रम गुरुनैव शिष्यः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥
अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो, विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणां ।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न बन्धः, चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥''

अर्थात् हम न शरीर हैं, न मन हैं, न बुद्धि हैं, न चित्त और अहंकार हैं । हमारा वास्तविक स्वरूप शिव रूप है । शिव का अभिप्राय है परब्रह्म का परमकल्याणकारी स्वरूप जो प्रतिपल नित्य नवीनतम् रूप में प्रकट हो रहा है ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– – योगमाता